छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन
2004 - 2005

रायपुर
2005

संस्कृति विभाग

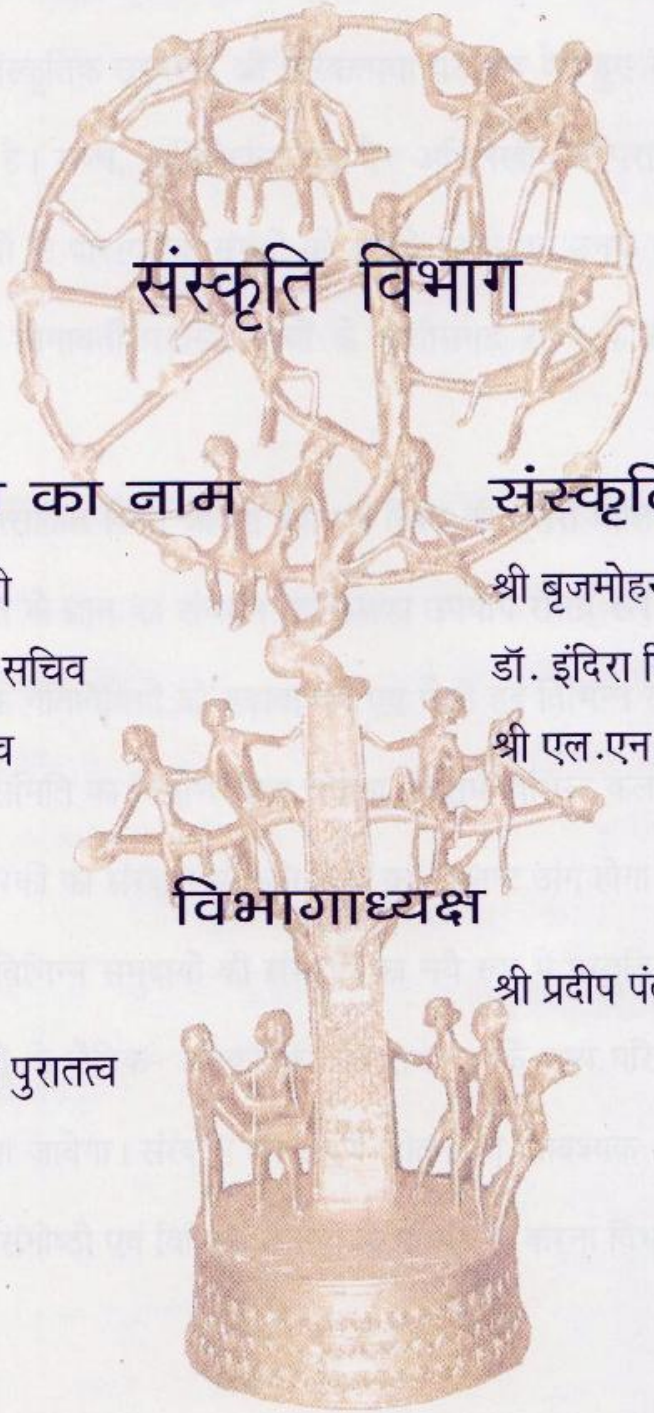

विभाग का नाम	**संस्कृति**
प्रभारी मंत्री	श्री बृजमोहन अग्रवाल
अपर मुख्य सचिव	डॉ. इंदिरा मिश्र
विशेष सचिव	श्री एल.एन. सूर्यवंशी
विभागाध्यक्ष	
संचालक, संस्कृति एवं पुरातत्व	श्री प्रदीप पंत

विभाग के उद्देश्य

राज्य में कोई औपचारिक या विशेष नीति के स्थान पर राज्य की परम्पराओं-मान्यताओं का समावेश एवं उनके पोषण-सवंर्धन के लिए सांस्कृतिक उद्देश्यों की परिकल्पना पर बल देते हुए राज्य की सांस्कृतिक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा रहा है। राज्य, अभिलेखीय एवं गैर अभिलेखीय परंपराओं के आधार पर संस्कृति को परिभाषित करेगा। राज्य समुदायों के पारस्परिक संबंधो को बनाये रखने एवं उनके मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास करेगा, इसके अतिरिक्त सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों के छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सांस्कृतिक संबंधों की नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की जायेगी।

राज्य की बोलियों को प्रोत्साहित किया जावेगा देश एवं विश्व की दूसरी बोलियों, समुदायों के मध्य संबंधों को प्रोत्साहित किया जायेगा। संस्कृति के ज्ञान का संचयन एवं उसका उपयोग समग्र रूप से एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जायेगा। राज्य में सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं फैली हुई विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने हेतु एक अंतरसंकायी समिति का निर्माण किया जायेगा, जिसमें विभिन्न कलाओं एवं संकायों के उच्च स्तरीय विशेषज्ञों का समावेश होगा। स्मारकों का संरक्षण संस्कृति नीति का विशिष्ट अंग होगा। राज्य को एक जीवंत संग्रहालय की नई परिकल्पना में रख कर विभिन्न समुदायों की संस्कृति का नये रूप में प्रस्तुतिकरण, नीति का एक प्रमुख भाग होगा। इसके अतिरिक्त समुदायों के जैविक- सांस्कृतिक तत्व तथा उनके मध्य परिवेशीय अंतरसंबंध को एक नया आयाम देते हुये यह प्रयास किया जावेगा। संस्कृति को संपूर्ण जीवन का आवश्यक अंग मानकर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन क्षेत्रीय कार्यक्रम, शोध-संगोष्ठी एवं विभिन्न उत्सवों के माध्यम से करना विभाग का ध्येय है।

क्रियाकलाप

संस्कृति विभाग का कार्य प्रदेश की संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व का संवर्धन करना है तथा उसके उत्तरोत्त विकास के लिये कार्य करते रहना है। विभाग के क्रियाकलाप मुख्यतः निम्नानुसार है-

- संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले व नीति निर्धारण कार्य।
- साहित्य एवं कला का विकास।
- सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण।
- ललित कला तथा लोक कला को प्रोत्साहन ।
- छत्तीसगढ़ राज्य की कला, संस्कृति, परम्पराओं एवं जनभाषाओं का संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन एवं देश विदेश में उसका प्रचार-प्रसार।
- अर्थाभावग्रस्त कलाकारों/साहित्यकारों को पेंशन व आर्थिक सहायता।
- अशासकीय सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता।
- चयनित कलाकारों/साहित्यकारों/विद्वानों को सम्मानित करने का कार्य।
- कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक विषयों के दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों, दस्तावेजों, स्मृति चिन्हों का संग्रह प्रकाशन, प्रदर्शन तथा संबंधित व्याख्यान, संगोष्ठियों आदि का आयोजन।
- पुराने अभिलेखों का संरक्षण, संवर्धन ।
- ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का संरक्षण तथा संग्रहालयों का विकास।
- ऐतिहासिक स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना
- सिनेमा अधिनियम के तहत नये सिनेमागृहों को लायसेंस।
- शासकीय कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य ।
- शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य ।

कला एवं संस्कृति

प्रदेश की संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण व संवर्धन हेतु विभागीय नीति के अनुरूप कार्यक्रम तैयार कर गतिविधियों का संचालन विभाग द्वारा किया जाता है, जिससे समुदायों के बीच पारंपरिक संबंधों को बनाये रखने में, उन्हें विकसित करने में, उनके जीवन, उनकी कलाओं को उत्प्रेरित किया जा सके। स्थानीय समुदायों की अबाध सांस्कृतिक परम्पराओं की पहचान, मान्यता देना, पुनर्जीवित करना, दस्तावेजीकरण, प्रस्तुति एवं उनका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। साथ ही छत्तीसगढ़ के अद्वितीय सांस्कृतिक वैविध्य एवं विशिष्ट पहचान को परिभाषित कर, उसके सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों तथा सांस्कृतिक प्रदेशों के साथ संबंध व विनिमय स्थापित किया जा रहा है। राज्य की समृद्ध जनजातीय परंपरा के संरक्षण एवं परिवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, जिसमें जनजातीय रहन-सहन तौर तरीके, रीति-रिवाज, लोक नृत्य, गायन एवं अन्य परंपराओं को बनाये रखने हेतु भी कार्य किया गया है। इस हेतु विभागीय क्रियाकलाप के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में कार्यरत स्वायत्तशासी एवं निजी क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी गई है। राजभाषा एवं संस्कृति के अन्तर्गत सहयोगी गतिविधियों हेतु 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ' स्थापित है।

आयोजन एवं उत्सव

राज्य नयी संस्थाओं/उत्सवों को प्रस्थापित करने के बजाय अस्तित्वमान पृष्ठभूमि वाले उत्सवों/संस्थाओं को प्रोत्साहित करता है, जिससे संस्कृति में अंतःसंकायी संवाद कायम रहे। इसी तारतम्य में विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए/सहयोग प्रदान किया गया ।

- राजधानी में अलंकरण समारोह व सात-दिवसीय राज्योत्सव के साथ-साथ सभी अन्य 15 जिलों में जिला प्रशासन के माध्यम से तीन दिवसीय राज्योत्सव का आयोजन। (नवम्बर 2004)
- पांच दिवसीय 'राष्ट्रीय रंग समारोह' में 'एकजुट', नादिरा बब्बर, मुम्बई, शांता गांधी के प्रसिद्ध नाटक 'जस्मा ओड़न', 'अभिनव रंगमंडल, उज्जैन, शरद शर्मा, भूषण भट्ट निर्देशित 'दुलारी बाई', मोहन राकेश की कृति 'लहरों के राजहंस' तथा 'रंगकर्मी', कोलकाता ऊषा गांगुली प्रसिद्ध कथाकार सआदत हसन मंटो की कहानियों का नाट्य रूपांतर 'बदनाम मंटो' और काशीनाथ सिंह की रचना 'काशीनामा' नाटक का मंचन किया गया। (अक्टूबर 2004)

- आई.टी.सी., संगीत रिंसर्च अकादमी, कोलकाता के सहयोग से त्रि-दिवसीय शास्त्रीय संगीत समारोह का आयोजन। साथ ही प्रशिक्षण कार्यशाला भी आयोजित की गई। (दिसम्बर 04)

- शास्त्रीय रागों पर आधारित 'पावस-प्रसंग' में डॉ. सुनीता भाले, सुश्री चित्रा मोडक, सुश्री अश्विनी व्याघ्राम्बरे का गायन प्रस्तुत किया गया। (सितम्बर04)

- छत्तीसगढ़ विधान सभा में बजट सत्र के समापन के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन। (जून 2004)
- स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति।

- राजभवन में सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत बस्तर के गेंड़ी नृत्य दल एवं पारंपरिक वाद्यों की प्रस्तुति दी गई। (अगस्त 2004)
- छत्तीसगढ़ विधानसभा में एकल अभिनय 'विवेकानंद' की प्रस्तुति। (दिसम्बर 2004)
- 13वीं अखिल भारतीय वन खेल प्रतियोगिता में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति। (दिसम्बर 2004)

- गणतंत्र दिवस के अवसर पर देशभक्ति का जज्बा जगाने वाले महानाट्य 'राष्ट्र का हुंकार' की प्रस्तुति।
- राज्य की सांस्कृतिक विरासत के प्रदर्शन, संरक्षण व प्रोत्साहन के लिए परंपरागत उत्सवों- जैसे चक्रधर महोत्सव, रायगढ़, भोरमदेव महोत्सव, लोक मड़ई, राजनांदगांव आदि का आयोजनों में उत्प्रेरक की भूमिका।

विभाग द्वारा सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने एवं छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से निम्नलिखित राज्यों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई -

- सिंहस्थ 2004, उज्जैन में दिनांक 5 एवं 6, 11 एवं 12, 18 एवं 19 तथा 22, 23 एवं 24 अप्रैल तथा 3 व 4 मई 2004 को 11 दिवसीय सांस्कृतिक संध्या का आयोजन छत्तीसगढ़ मंडप में किया गया, जिसमें राज्य की विशिष्ट पहचान पंडवानी, पंथी एवं लोकमंच के कार्यक्रम छत्तीसगढ़ के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए।
- 29 अक्टूबर को हिमाचल प्रदेश में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहरा उत्सव में श्रीमती शांतिबाई चेलक का पंडवानी गायन कराया गया। 6-7 नवम्बर को जयपुर में आयोजित लोकरंग 2004 में पंथी नृत्य तथा कबीर गायन का आयोजन किया गया।
- 24 नवम्बर को रीच, देहरादून में सामेशास्त्री देवी की पंडवानी एवं श्री अमर श्रीवास द्वारा नृत्य-गीत की प्रस्तुति।

- 1 से 20 फरवरी तक हरियाणा में आयोजित सूरजकुंड मेले में राज्य के लोक कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुति।
- 20 फरवरी को उड़ीसा में आयोजित खारवेल महोत्सव में सुश्री उषा बारले की पंडवानी प्रस्तुति।

विशेष-

- राज्य के कलाकारों, विशेषकर लोक कलाकारों की पहचान कर उन्हें पंजीबद्ध करने एवं सम्मान पत्र भेंट करने एवं प्रदर्शन के अवसर प्रदान करने के प्रयासों की अभिनव योजना 'चिन्हारी' आरंभ।

- छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा 'दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर' की सदस्यता के लिए रू. 1.00 करोड़ की स्वीकृति दी गई है, जिससे राज्य के कलाकारों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों में भाग लेने का अधिक से अधिक अवसर प्राप्त होगा।

साहित्य

- साहित्य के क्षेत्र में उभरती प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से सृजनात्मक लेखन शिविरों का आयोजन, स्कूल शिक्षा विभाग के माध्यम से राज्य के सभी 16 अग्रणी महाविद्यालयों में किया गया। उत्कृष्ट रचनाओं के प्रकाशन की योजना।
- विभाग के अंतर्गत स्थापित पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ द्वारा राज्य के साहित्यकारों और रचनात्मक लेखन पर केन्द्रित कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।
- अंचल के महत्वपूर्ण साहित्यकारों की स्मृति को अक्षुण्ण रखने हेतु स्मृति व्याख्यानों का आयोजन किया जा रहा है। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, माधव राव सप्रे, द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' एवं मुक्तिबोध स्मृति व्याख्यानों का आयोजन ।

- राज्य में सिंधी साहित्य एवं संस्कृति को विकसित एवं संरक्षित करने के उद्देश्य से सिंधी साहित्य अकादमी के गठन की कार्यवाही की जा रही है।

विभाग के अंतर्गत स्थापित सम्मान

- पं. सुन्दरलाल शर्मा सम्मान (साहित्य/आंचलिक साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान),
- चक्रधर सम्मान (कला/शिल्प कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान)

- दाऊ मंदराजी सम्मान (लोक कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु राज्य स्तरीय सम्मान)

इसके अतिरिक्त अन्य विभागों द्वारा दिए जाने वाले सम्मानों के सम्मान समारोह का समन्वय एवं अलंकरण समारोह संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित।

अनुदान एवं सहायता

अस्तित्वमान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली संस्थाओं को बढ़ावा, शारीरिक तथा मानसिक चुनौतियों से जूझते लोगों को प्रोत्साहन तथा सुरक्षित जीवन-यापन के लिए अर्थाभावग्रस्त संस्कृति कर्मियों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए विभागीय पहल कर पूर्व प्रकरणों में कार्यवाही तथा नए प्रकरण तैयार कर सहायता के लिए निम्नानुसार कार्य किए गए -

- वर्ष के दौरान 24 अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/कलाकारों को जिला पंचायतों के माध्यम से 700/- प्रतिमाह की दर से मासिक सहायता (पेंशन) स्वीकृत किया गया है।
- विभाग द्वारा कलाकार कल्याण कोष से भी 1 विभिन्न जरूरतमंद कलाकारों/ साहित्यकारों को रू. 5,000/- के मान से वर्ष 2004-05 के दौरान राशि स्वीकृत की गई है।
- राज्य की संस्कृति, कला से जुड़ी 60 विभिन्न संस्थाओं/व्यक्तियों को विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों, कला के विकास हेतु अनुदान दिया गया।
- कलाविथिका के विकास से संबंधित 4 संस्थाओं/व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।

साहित्यिक गोष्ठियों व साहित्य एवं अन्य सामाजिक कार्यों से जुड़े अन्य आयोजनों हेतु 9 संस्थाओं/व्यक्तियों को तथा साहित्य एवं कला से जुड़े प्रकाशनों हेतु 13 संस्था/व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।

अभिलेखन

स्थानीय समुदायों की अबाध सांस्कृतिक परंपराओं की पहचान, दस्तावेजीकरण तथा गैर-अभिलेखीय परंपराओं को प्रोत्साहित करने हेतु निम्नानुसार प्रलेखन कार्य किए गए -

- देवार जाति का अभिलेखन - राज्य की देवार जाति की विलुप्त होते विधाओं, रीति-रिवाज, कार्यों एवं सांस्कृतिक पक्षों को रेखांकित करने की दृष्टि से तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- बांसगीत का अभिलेखन - राज्य में विलुप्त होने के कगार पर खड़ी सांस्कृतिक विधा बांसगीत को समृद्ध करने की दृष्टि से विभाग द्वारा सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से अभिलेखन कार्य किया गया।

प्रकाशन

सांस्कृतिक परंपराओं की प्रस्तुति एवं उनका प्रचार-प्रसार, सांस्कृतिक गतिविधियों की निरंतरता तथा जीवन्त प्रवाह मानकर विभिन्न प्रकाशन किए गए है -

- राज्य अलंकरण दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य प्रेरक विभूतियां व सम्मान ग्रहिताओं संबंधी पुस्तिका

- राज्योत्सव 2004 के अवसर पर 2 से 7 नवम्बर तक आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम, खाई-खजेना एवं राज्य दिवस सांस्कृतिक कार्यक्रमों के ब्रोशर।

- गजानन माधव मुक्तिबोध की स्मृति व्याख्यान पर आयोजित 'एक लालटेन के सहारे' पुस्तिका का प्रकाशन।

- स्वतंत्रता दिवस 2004, राष्ट्रीय रंग समारोह 2004, पावस-प्रसंग 2004 एवं चिन्हारी योजना, शास्त्रीय संगीत समारोह संबंधी ब्रोशर का प्रकाशन।

- गणतंत्र दिवस समारोह 2005 पुस्तिका का प्रकाशन।

- छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं पुरातत्व में रामायण-महाभारत की झलक पर आधारित ब्रोशर का प्रकाशन।

- छत्तीसगढ़ में प्राप्त प्राचीन सिक्के पर आधारित ब्रोशर का प्रकाशन

- राजीवलोचन महोत्सव 2005 का ब्रोशर एवं स्मारिका का प्रकाशन। विभागीय पुस्तिका 'उत्कीर्ण लेख' एवं हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपि 'राधा-विनोद' प्रकाशनाधीन।

गोष्ठियां

अंतःसंकायी संवाद तथा स्थानीय समुदायों के सहनिर्देशित पहल से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करने के उद्देश्य से निम्नानुसार आयोजन किए गए –

- बुद्ध जयंती के अवसर पर महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय, संग्रहालय परिसर, रायपुर में बौद्ध पुरावशेषों पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। (मई 2004)
- बख्शी स्मृति व्याख्यान के अवसर पर बख्शी जी के जीवन वृत्त की भरथरी धुन में लोक कलाकारों द्वारा प्रस्तुति आयोजित की गई। (मई 2004)

- सप्रे स्मृति व्याख्यान के अवसर पर हिन्दी की प्रथम कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' का साभिनय प्रस्तुति आयोजित की गई। (जून 2004)
- 'विप्र' स्मृति व्याख्यान के अवसर पर विप्र जी की रचनाओं पर आधारित नृत्य-गीत का आयोजन किया गया। (जुलाई 2004)
- 31 जुलाई को कालजयी कहानीकार मुंशी प्रेमचंद जी के 125 वीं जयंती के अवसर पर गोष्ठी एवं उनके साहित्य की साप्ताहिक प्रदर्शनी का आयोजन।

- मुक्तिबोध स्मृति व्याख्यान का आयोजन। (सितम्बर 2004)
- 10 दिसम्बर को शहीद वीरनारायण सिंह के बलिदान दिवस के अवसर पर संगोष्ठी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन।
- राष्ट्रीय रंग समारोह के अवसर पर 'हिन्दी रंगमंच और उसका विस्तार' विषय पर सुश्री ऊषा गांगुली की परिचर्चा का आयोजन।

प्रदर्शनी

सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को क्रियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का निम्नानुसार प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से किया गया/कराया जा रहा है -

- सिहस्थ 2004, उज्जैन छत्तीसगढ़ मंडप में राज्य की कला, संस्कृति, पुरातत्व आदि पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- महावीर जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ में जैन धर्म पुरातत्व एवं परंपरा से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- बुद्ध जयंती के अवसर पर महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय, संग्रहालय परिसर, रायपुर में बौद्ध पुरावशेषों पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

- स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर डाक टिकटों पर प्रदर्शनी का आयोजन।
- रंग समारोह 2004 के अवसर पर वरिष्ठ रंगकर्मियों के छायाचित्रों की प्रदर्शनी।
- मुक्तिबोध स्मृति व्याख्यान के अवसर पर 'परम अभिव्यक्ति की खोज' पर प्रदर्शनी का आयोजन।

- छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं पुरातत्व में रामायण-महाभारत की झलक पर आधारित छायाचित्रों की प्रदर्शनी।
- राज्योत्सव 2004 के अवसर पर संस्कृति विभाग के स्टाल में छत्तीसगढी व्यंजनों पर आधारित खाई-खजेना फोटो प्रदर्शनी का आयोजन।
- शास्त्रीय संगीत समारोह में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के वरिष्ठ संगीतज्ञों के छायाचित्रों की प्रदर्शनी।
- गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर गुरू घासीदास जी से संबंधित स्थलों के छायाचित्रों की प्रदर्शनी
- छत्तीसगढ़ में प्राप्त प्राचीन सिक्के पर आधारित छायाचित्रों की प्रदर्शनी।
- राजीवलोचन महोत्सव 2005 के अवसर पर पंचक्रोशी यात्रा एवं शिल्पकारों की नजर में राजिम पर आधारित प्रदर्शनी का आयोजन। (प्रस्तावित)

लोक शिल्पियों की कार्यशाला

- 'आकार-2004' पारंपरिक शिल्प एवं कला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन,जिसमें प्रशिक्षण राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिल्पकारों/ विशेषज्ञों द्वारा कोण्डागांव, बस्तर एवं राजस्थान का मृदा शिल्प, बस्तर का ढोकरा शिल्प, बिहार की मधुबनी चित्रकला, राजस्थान की फड़ चित्रकला, मध्यप्रदेश की जरदोजी कला, नारायणपुर, बस्तर का काष्ठ शिल्प, सरगुजा के भित्ति चित्रकला और छत्तीसगढ़ी व्यंजन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

- माह सितम्बर-अक्टूबर में ढोकरा शिल्प, भित्तिचित्र कार्यशाला का आयोजन।

- माह अक्टूबर-नवम्बर में ढोकरा शिल्प, काष्ठ शिल्पियों की कार्यशाला का आयोजन।
- पुरखौती मुक्तांगन के विकास हेतु विभिन्न लोक शिल्पियों की कार्यशालाएं पुरखौती मुक्तांगन परिसर में लगातार किया जा रहा है।

मुक्ताकाश थियेटर

लोक-प्रस्तुतियों की आवश्यकता पूर्ति के लिए महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा और रंग-संसार की इन्द्रधनुषी छटा को सतत् आकारित करने हेतु मुक्ताकाश थियेटर का निर्माण कराया जा रहा है। आधुनिक रंग-सुविधाओं से पूर्ण लगभग 1000 दर्शक क्षमता वाले इस थियेटर में नियमित रूप से सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया जावेगा।

सर्वेक्षण

- सरगुजा एवं जशपुर जिले के लोक कलाकारों और सांस्कृतिक दलों का सर्वेक्षण। विभाग में लोक कलाकारों/कला दलों संबंधी जानकारी को वर्गीकृत कर सूचीकरण
- विभिन्न जिला कलेक्टरों के माध्यम से विकासखण्डवार लोक कलाकारों की सूची तैयार कराने की कार्यवाही
- संस्कृति और पारंपरिक कला से संपन्न छत्तीसगढ़ राज्य के कलाकारों, विशेषकर लोक कलाकारों की पहचान कर उन्हें सूचीबद्ध करने एवं सम्मानित करने के उद्देश्य से प्रशस्ति पत्र वितरित करने की अभिनव योजना 'चिन्हारी' आरंभ की गई है।

पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय

विभाग का एक मुख्य कार्य प्रदेश भर में विस्तृत पुरासंपदा का सर्वेक्षण, चिन्हांकन, छायांकन, संकलन, संरक्षण, प्रदर्शन, उत्खनन एवं अनुरक्षण करना है, साथ ही नये संग्रहालयों की स्थापना कर जन-सामान्य एवं शोधार्थियों में पुरातत्वीय संपदा के प्रति जागृति पैदा करना है। इसके अतिरिक्त स्मारकों के अनुरक्षण, महत्वपूर्ण प्रतिमाओं की प्रतिकृतियों का निर्माण, स्मारकों का संरक्षण, प्रदर्शन एवं संगोष्ठियों का आयोजन, आदिवासी लोककला संस्कृति एवं प्राचीन परम्पराओं का संरक्षण एवं संधारण, नवीन खोजों एवं उपलब्धियों का प्रकाशन मुख्य कार्य है। विभाग के अन्तर्गत प्रदेश में 3 स्थलों पर संग्रहालय है तथा 58 राज्य संरक्षित पुरातत्वीय स्मारक है। अभिलेखागार प्रभाग को पुरातत्व के अन्तर्गत स्थापित किया गया है, जिसमें ऐतिहासिक अभिलेखों को एकत्रित कर उसका संरक्षण एवं संवर्धन कार्य विभागीय उद्देश्यों में सम्मिलित है।

- राज्य की विस्तृत फैली पुरासंपदा के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में संरक्षित पुरातत्वीय स्मारकों के परिसर का उन्नयन और विकास कार्य को गति देकर स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु सिरपुर, ताला, मड़वा महल, कवर्धा में विशेष प्रयास एवं सिरपुर के विकास हेतु टॉक्स फोर्स का गठन।

- सिरपुर तथा अन्य स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।
- लगभग 50 वर्ष पश्चात पुरातत्वीय महत्व के स्थल सिरपुर में राज्य शासन द्वारा पुरातात्विक उत्खनन आरंभ किया गया है। सिरपुर में पुरातत्व संग्रहालय के निर्माण की कार्यवाही प्रगति पर है।
- सिरपुर की सांस्कृतिक विरासत के उत्थान एवं राज्य में सांस्कृतिक सुविधा व थियेटर हेतु 'जैपनीज ग्रांट फॉर कल्चरल हेरिटेज' को 900 मिलियन येन (रू. 38 करोड़ 70 लाख) की योजना भारत शासन के माध्यम से प्रेषित की गई।

- बस्तर की पुरातत्वीय धरोहर, वहां की लोक कला, शिल्प, जनभाषा, साहित्य, अंचल की विशिष्ट संस्कृति, कला और शिल्प को सुरक्षित एवं प्रदर्शित करने हेतु एक अभिनव संग्रहालय की योजना पर कार्यवाही की जा रही है।

- अनुरक्षण कार्य - शिवमंदिर उरांवटोला, सामत सरना समूह, डीपाडीह, जिला सरगुजा, छेरकी महल एवं मंडवा महल जिला कबीरधाम, शिवमंदिर ताला आदि।
- रसायनिक संरक्षण कार्य - शिवमंदिर उरांवटोला, शिव मंदिर, घटियारी व संग्रहालय की प्राचीन कलाकृतियों, कपिलेश्वर मंदिर समूह, बालोद, शिव मंदिर, पलारी, दुर्ग आदि।
- सर्वेक्षण एवं संरक्षण कार्य - दुर्ग, जशपुर एवं बस्तर जिले का पुरातत्वीय सर्वेक्षण, सरगुजा जिले के शैलाश्रयों का सर्वेक्षण एवं दुर्ग तथा बस्तर क्षेत्र के महापाषाणीय स्थलों का सर्वेक्षण।

माडलिंग

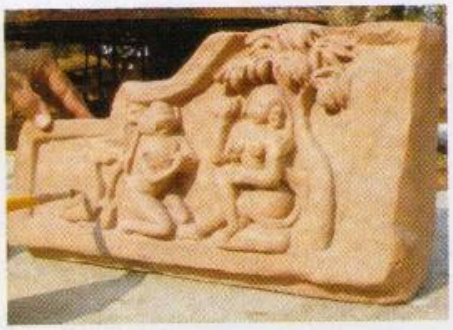

- आकार प्रशिक्षण शिविर के दौरान पंजीकृत 300 से अधिक प्रशिक्षार्थियों को विभिन्न माध्यमों में प्रतिकृति निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया।
- राजनांदगांव के अशोक वाटिका (सीता-हनुमान) की प्रतिमा का प्रतिकृति निर्माण किया जा रहा है।

- भोरमदेव मंदिर की प्रतिकृति महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर निर्माण।
- पुरासंपदा के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में पहल करते हुए महत्वपूर्ण संरक्षित पुरातत्वीय स्मारकों के परिसर का उन्नयन और विकास जिला प्रशासन से संपर्क कर जिला पुरातत्व संघों को सुदृढ़ीकरण।
- महत्वपूर्ण स्मारकों के सुरक्षा एवं संरक्षण के प्रति जनचेतना जागृति करने की दृष्टि से ग्राम धरोहर समितियों के गठन के विशेष प्रयास।

- पुरासंपदा के संरक्षण एवं प्रदर्शन की दृष्टि से महत्वपूर्ण जिलों में जिला पुरातत्व संग्रहालय बनाने की योजना के तहत निम्नांकित जिलों में संग्रहालय निर्माण जिला पुरातत्व संघों का सुदृढ़ीकरण कर जिला पुरातत्व संघ के अध्यक्ष एवं कलेक्टर के माध्यम से निम्नलिखित स्थलों पर किया जा रहा है - खैरागढ़ विश्वविद्यालय, राजनांदगांव, जांजगीर-चांपा, महासमुन्द, कांकेर, सरगुजा, रायगढ़, कोरिया, बिलासपुर।

पुरातत्वीय गोष्ठी

- छत्तीसगढ़ के पुरातत्व एवं संस्कृति में रामायण-महाभारत को प्रमाणित करने वाले अचल प्रमाण बहुतायत में है जो तत्कालीन विरासत की प्रामाणिकता को रेखांकित करने की दृष्टि से विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं पुरातत्व में रामायण-महाभारत की झलक पर आधारित संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

- विभाग द्वारा मुद्राओं के गौरवशाली अतीत से नई पीढ़ी को अवगत कराने तथा विमर्श के जरिये पुरा-सम्पदा के प्रति प्रेम प्रकट करने की दृष्टि से छत्तीसगढ़ में प्राप्त प्राचीन सिक्के पर आधारित अंतरराज्यीय गोष्ठी का आयोजन किया गया।

अभिलेखागार प्रभाग

ऐतिहासिक महत्व के अभिलेखों का संग्रह संरक्षण, प्रदर्शन तथा शोध संदर्भ हेतु पुराने दस्तावेजों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विभाग में अभिलेखागार की स्थापना की गई है। इस हेतु छत्तीसगढ़ से संबंधित अभिलेखों की प्रति प्राप्त करने की कार्यवाही की जा रही है।

बहुआयामी संस्कृति संस्थान

बहुआयामी संस्कृति संस्थान, राज्य के समस्त प्रकार के सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, विकास, प्रचार-प्रसार, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित संस्थान होगा। बहुआयामी संस्कृति संस्थान को पंजीकृत करा लिया गया है, संस्थान के गठन की कार्यवाही प्रगति पर है। केन्द्र शासन द्वारा उक्त बहुआयामी संस्कृति संस्थान हेतु रू. 5.00 करोड़ की राशि स्वीकृत करने की सैद्धांतिक स्वीकृति दी है, जिसमें से रू. 25.00 लाख आवंटन की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। उक्त संस्थान के निर्माण हेतु रायपुर में भूमि का चयन भी किया जा चुका है। इन्टैक द्वारा नामांकित ख्याति प्राप्त वास्तुविदों को परिसर के लिए अपनी परिकल्पना देने हेतु आमंत्रित किया गया है।

पुरखौती मुक्तांगन

विभाग की महत्वाकांक्षी योजना 'मुक्तांगन संग्रहालय' की स्थापना हेतु भूमि-अधिग्रहण की कार्यवाही पूर्णता की ओर है। इसके साथ ही लगभग 200 एकड़ क्षेत्र का विस्तार, सौंदर्यीकरण आदि कार्य प्रगति पर है। इस अभिनव संग्रहालय का निर्माण मुख्य रूप से राज्य के पारंपरिक शिल्पियों के माध्यम से ही किए जाने की योजना के अनुरूप आदिवासी क्षेत्र उपयोजना के अंतर्गत प्राप्त राशि का उपयोग किया जा रहा है एवं अन्य निर्माण कार्य वन विभाग एवं ग्रामीण अभियांत्रिकी विभाग के माध्यम से सम्पन्न किये जा रहे हैं।

संग्रहालय

- महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर परिसर को आकर्षक बनाने के उद्देश्य से उद्यान का सौन्दर्यीकरण तथा प्रदर्शन व्यवस्था को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने की कार्यवाही प्रगति पर।
- बिलासपुर संग्रहालय हेतु सर्किट हाऊस के निकट स्थित 'बाल भवन' को आवंटित कराने की कार्यवाही प्रगति पर है।

- राज्य शासन के निर्णय अनुसार बस्तर की पुरातत्वीय धरोहर, वहां की लोक कला, शिल्प, जनभाषा, जनभाषा साहित्य, अंचल की विशिष्ट संस्कृति, कला और शिल्प को सुरक्षित एवं प्रदर्शित करने हेतु भी एक अभिनव संग्रहालय की योजना पर कार्यवाही की जा रही है। इस संबंध में पुरातत्वीय संग्रहालय के लिए भूमि उपलब्ध कराने हेतु कलेक्टर बस्तर के माध्यम से कार्यवाही की जा रही है। भूमि प्राप्त होते ही संग्रहालय की योजना को मूर्तरूप दिया जाएगा।

महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय

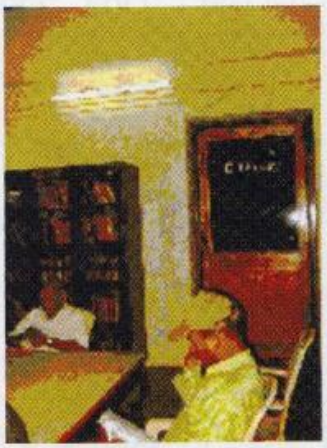

विभाग के अंतर्गत संचालित सार्वजनिक पुस्तकालय महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय राज्य केन्द्रीय ग्रंथालय का दर्जा प्राप्त हो चुका है। ग्रंथालय को 'चिप्स' के माध्यम से ई-लाइब्रेरी के रूप में विकसित करने की कार्यवाही की गई है एवं लाईब्रेरी का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। महंत सर्वेश्वरदास राज्य केन्द्रीय ग्रंथालय को शहीद स्मारक के एक खंड में स्थानांतरित करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है।

मार्च 2005 तक प्रस्तावित कार्य

- राजीव लोचन महोत्सव में मेला स्थल पर निर्मित मंच, लोमश ऋषि आश्रम एवं चम्पारण्य में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।
- स्वदेशी मेले एवं 'जगार' आयोजन रायपुर में राज्य के लोक कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुति।
- सम-कालीन चित्रकारों की कार्यशाला का आयोजन।
- लोक शिल्पियों की राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शिल्प मड़ई का आयोजन।
- उदीयमान बाल कलाकारों पर आधारित कार्यक्रम 'नवांकुर' का आयोजन।
- गोंदना एवं बांस गीतों के अभिलेखन की पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन।
- छत्तीसगढ़ की कला, परंपरा, भाषाओं पर 'छत्तीसगढ़ी अभिव्यक्ति' पर आधारित जिला स्तरीय एवं राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजनपीठ के माध्यम से किया जावेगा इसके लिए पीठ को राशि उपलब्ध कराई गई है।

संस्कृति एवं पुरातत्व

(संस्कृति पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय बजट प्रावधान की जानकारी)

वित्तीय वर्ष 2004-05

क. 1	योजना का नाम 2	आयोजनेत्तर 3	आयोजना 4	योग 5
लेखा शीर्ष - 2205			(आंकड़े लाख रूपयों में)	
1	103 - पुरातत्व	76.19	87.90	164.09
2	104 - अभिलेखागार	9.40	5.00	14.40
3	105 - सार्वजनिक पुस्तकालय	-	15.00	15.00
4	107 - संग्रहालय	39.02	64.00	103.02
	योग	124.61	171.90	296.51
लेखा शीर्ष - 2202 -2205-3454		(आंकड़े लाख रूपयों में)		
1	2202 आधुनिक भारतीय भाषा (102) और साहित्य का संवर्धन	14.83	3.25	18.08
2	2205 कला और संस्कृति 101 ललित कलाओं की शिक्षा	2.75	100.00	102.75
3	102 कला और संस्कृति का संवर्धन	79.00	-	79.00
4	(800) अन्य व्यय	1.00	59.50	60.50
5	3454 जनगणना सर्वे एवं सांख्यिकी (110) गजेटियर	-	7.53	7.53
	योग	97.58	170.28	267.86

मांग संख्या 41-आदिवासी उप योजना, 2205 - कला एवं संस्कृति

1	107 संग्रहालय	-	100.00	100.00

○ वित्तीय वर्ष 2004-05 में प्रथम अनुपूरक से प्राप्त रू. 170.00 लाख की जानकारी-

लेखा शीर्ष - 2205		(आंकड़े लाख रूपयों में)		
1	107 - संग्रहालय	0	20.00	20.00
2	800 - अन्य व्यय	0	150.00	150.00

संस्कृति एवं पुरातत्व

वर्तमान में संचालनालय में कार्यरत अमले का विवरण

क्रमांक	कार्यालय का नाम	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	चतुर्थ श्रेणी	योग
1	पुरातत्व, अभिलेखागार, संग्रहालय, राजभाषा एवं संस्कृति	9	2	45	29	85
	योग	9	2	45	29	85

संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व की अनुमोदित पद संरचना

क्र.	पद नाम	वेतनमान	शासन द्वारा स्वीकृत पद	भरे पद	रिक्त पद
1	2	3	4	5	6
1	संचालक - प्रथम श्रेणी	अखिल भारतीय सेवा	1	1	-
2	संयुक्त संचालक-प्रथम श्रेणी	12000-16500	2	2	-
3	उपसंचालक-प्रथम श्रेणी	10000-15200	6	6	-
4	सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी	8000-13500	1	-	1
5	सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी	6500-10500	1	-	1
6	प्रकाशन अधिकारी	8000-13500	1	-	1
7	मुद्राशास्त्री	8000-13500	1	-	1
8	पुरातत्ववेत्ता	8000-13500	2	1	1
9	ग्रंथपाल	8000-13500	1	-	1
10	सहायक यंत्री	8000-13500	1	-	1
11	मुख्य रसायनज्ञ	8000-13500	1	-	1
12	पुरातत्वीय अधिकारी	8000-13500	1	-	1
13	पुरालेख अधिकारी	8000-13500	1	-	1
14	पुरालेखवेत्ता	8000-13500	1	-	1
15	संग्रहाध्यक्ष	8000-13500	3	-	3
16	लेखाधिकारी	8000-13500	1	1	-
17	संरक्षण अधिकारी	6500-10500	1	-	1
18	सहा.पुरालेख अधि.तृतीय श्रेणी	5500-9000	1	1	-
19	अधीक्षक	5500-9000	1	1	-
20	अनुदेशक	5500-9000	2	2	-
21	कनिष्ठ लेखाधिकारी	5000-8000	1	-	1
22	सहायक अधीक्षक	5000-8000	1	1	-
23	सहायक ग्रंथपाल	5000-8000	2	1	1

1	2	3	4	5	6
24	सहायक प्रोग्रामर	5000-8000	1	-	1
25	उपयंत्री	5000-8000	3	2	1
26	मान चित्रकार	5000-8000	2	1	1
27	कलाकार	5000-8000	2	1	1
28	रसायनज्ञ	5000-8000	2	2	-
29	शोध सहायक	5000-8000	2	1	1
30	सहायक वर्ग 1	4500-7000	1	1	-
31	तकनीकी सहायक	4500-7000	2	1	1
32	सहायक पुरालेखपाल	4500-7000	1	-	1
33	सहायक कलाकार	4500-7000	2	2	-
34	सहायक रसायनज्ञ	4500-7000	2	1	1
35	उत्खनन सहायक	4500-7000	3	1	2
36	अनुवादक	4500-7000	2	-	2
37	सहायक वर्ग - 2	4000-6000	12	10	2
38	स्टेनो ग्राफर	4000-6000	3	1	2
39	विडीयोग्राफर/छायाचित्रकार	4000-6000	1	-	1
40	पर्यवेक्षक	4000-6000	1	-	1
41	सर्वेयर	4000-6000	3	-	3
42	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	3500-5200	8	-	8
43	मार्ग दर्शक / गाईड	3500-5200	3	2	1
44	स्टेनों टायपिस्ट	3050-4590	5	2	3
45	सहायक ग्रेड-3	3050-4590	17	10	7
46	वाहन चालक	3050-4590	3	1	2
47	मोल्डर/सेल्समेन	3050-4590	2	-	2
48	बाईन्डर	3050-4590	1	-	1
49	भृत्य	2550-3200	25	25	-
50	चौकीदार	2550-3200	3	3	-
51	चौकीदार	जिलाध्यक्ष दर	1	-	1
52	फर्राश (अंशकालीन)	जिलाध्यक्ष दर	1	-	1
53	केयर टेकर	जिलाध्यक्ष दर	12	-	12
	योग		160	85	75